प्रश्न ८६—(१) उपन्यास एवं कहानी के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

(२) "कहानी उपन्यास का लघु रूप नहीं है अपितु वह एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा है।" इस कथन को ध्यान में रखते हुए, कहानी और उपन्यास के साम्य और वैषम्य पर प्रकाश डालिए।

(३) "आज की कहानी उपन्यास से एक सर्वथा भिन्न एवं स्वतन्त्र साहित्यिक रूप है।" इस कथन को दृष्टि-पथ में रखते हुए कहानी और उपन्यास के भेद को समझाइए।

'उपन्यास' शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है, किन्तु संस्कृत में यह इसके आधुनिक अर्थ में प्रयुक्त नहीं है। आज उपन्यास के शब्द से एक साहित्यिक विधा का अर्थ ग्रहण किया जाता है। जिसमें "जीवन एवं जगत् का सविस्तार निर्देशन होता है, जीवन और जगत् की व्याख्या होती है।" कहानी प्राचीन आख्यायिका की सन्तति होने पर भी स्वरूप में उससे भिन्न है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्राचीन संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त कथा एवं आख्यायिका शब्दों का प्रयोग आज उसी अर्थ में नहीं हो रहा है।

आधुनिक काल में प्रचारलब्ध उपन्यास एवं आख्यायिका चिरकाल से सम्बद्ध होते हुए भी आज के विकासवादी युग में एक-दूसरे से पर्याप्त साम्य रखते हुए भी परस्पर भिन्न हैं। 'उपन्यास' शब्द का अर्थ है—"युक्तिसंगत रूप से अभिनव को अभिनय रूप में प्रस्तुत करना।" संस्कृत में लिखित 'कादम्बरी' उपन्यास का ही पूर्वरूप है। आज मराठी में उपन्यास के अर्थ में 'कादम्बरी' शब्द का प्रयोग होता है। गुजराती में 'नवलकथा' जो कि नवीनता, नूतनता के साथ अँग्रेजी के Novel शब्द के समकक्ष ही है। आज हिन्दी में भी 'उपन्यास शब्द का प्रयोग इन्हीं अर्थों में हो रहा है।

वर्तमान युग की कहानियाँ जिनको गल्प, कथा, लघुकथा और आख्यायिका भी कहते हैं, वे चिरकाल से प्रचलित कहानियों की ही सन्तति हैं किन्तु 'टेकनीक' की दृष्टि से उस पर पाश्चात्य प्रभाव इतना पड़ चुका है कि वे उनसे भिन्न प्रतीत होती हैं। बाबूगुलाबराय जी का यह कथन सत्य है कि—"कहानी पुराने रूप में

Scanned with CamScanner

उपन्यास की अवज्ञा है तो नए रूप में उसकी अवज्ञा।"

कहानी, उपन्यास, नाटक—साहित्य की इन तीनों ही विधाओं के तत्त्वों में सर्वथा समानता है, किन्तु तत्त्वों के अनुपात का अन्तर वैषम्य का कारण बनता है। उदाहरण के लिए कथा-प्रधान उपन्यास है; कथोपकथन प्रधान नाटक एवं चरित्र-चित्रण अथवा समस्या प्रधान कहानी होती है, किन्तु इतना साम्य होने पर इन तत्त्वों के प्रयोग में प्रधानता के कारण उनका भिन्न स्वरूप सिद्ध होता है—"प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति।" इस न्याय से नामों का आधार अन्ततः तत्त्व की प्रधानता है।

कहानी एवं उपन्यास के निम्न सर्वमान्य तत्त्व हैं—(१) उद्देश्य, (२) कथा-वस्तु; (३) पात्र-चरित्र-चित्रण, (४) कथोपकथन, (५) देशकाल तथा (६) भाषा-शैली।

उद्देश्य—वास्तव में इन दोनों विधाओं के अन्तर को स्पष्ट करने के लिए उद्देश्य तत्त्व ही पर्याप्त है। उपन्यास के समान कहानी सर्वांङ्गीण हल प्रस्तुत नहीं करती, वह तो मात्र मार्ग-दर्शन, इंगित अथवा सुझाव देती है। कहानी उपन्यास की भाँति कथा-प्रधान नहीं होती है। कहानी तो अपने एकान्त लक्ष्य-सिद्धि के लिए मर्मस्पर्शी प्रभविष्णुतापूर्ण समाधान करती है। कहानी की इसी विशेषता को लक्ष्य कर श्री वासुदेव ने लिखा है—"उपन्यास उस शिकारी के समान है जो अपने निशाने की चिड़ियों के साथ उसके आसपास बैठी हुई दूसरी चिड़ियों तथा उसके आस के दृश्य वातावरण जहाँ तक उसकी दृष्टि जा सकती है, का निरीक्षण करता है। उसके विपरीत कहानीकार धनुर्विद्या-विशारद वीर अर्जुन की तरह अपने निशाने को अचूक बनाने के लिए केवल पक्षी की आँखों से ज्यादा से ज्यादा सिर को जिसमें आँख स्थित है, लक्ष्य कर तीर छोड़ता है। इस प्रकार कहानीकार केवल एक ही लक्ष्य पर सारा आलोक केन्द्रित करके उसके प्रभाव को तीव्रतम बनाने की चेष्टा करता है।

उपन्यास विशाल आकार का होता है, इसलिए अनेक समस्याएँ, विस्तृत विश्लेषण एवं अनेक उद्देश्यों से समन्वित होता है। कहानी का शब्द, प्रतिशब्द एवं वाक्य निरन्तर निश्चित लक्ष्योन्मुख होता है।

कथावस्तु—कथावस्तु के अभाव में उपन्यास रचना सम्भव नहीं है। पाश्चात्य देशों के कथा के अभाव में भी बन रही है।

उपन्यास में प्रासंगिक कथाएँ, प्रकृति-वर्णन, राजनीतिक, सामाजिक साहित्यिक समस्याओं का विश्लेषण विस्तार किया जा सकता है किन्तु कहानी में यह सम्भव नहीं है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि—"उपन्यास एक शाखा-प्रशाखा वाला विशाल वृक्ष है जबकि कहानी एक सुकुमार लता।" कहानीकार 'पहाड़ी' के शब्दों में, "उपन्यास को हम नक्षत्र खचित आकाश कहें तो कहानी को सप्तरंगी इन्द्रधनुष मान लें। व्याख्या उपन्यास का प्राण है। संकेत और गूंज कहानी की जीवन-श्वासें।" श्री प्रेमचन्द ने उपन्यास और कहानी के अन्तर को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि—'कहानी रचना है जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी मनोभाव को प्रदर्शित करना लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उनका कथाविन्यास सब उसी एक भाव की पुष्टि करते हैं। उपन्यास की भाँति उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण तथा वृहत रूप

Scanned with CamScanner